2:40

दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-8

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

Mentorship Program
Mukherjee

DTVF / OPT-23 **HL-2308**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक : 250* *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Prem Singh Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10/09/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

3	6	0	0	9	1	3

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ दिया गया गद्यावतरण 'राजेन्द्र यादव' द्वारा संपादित नई कहानी आंदोलन के प्रमुख संकलन 'एक दुनिया ~~समानान्तर~~ समानान्तर' में संकलित 'सहानी' की कहानी 'एक नाव के यात्री' से ~~लिया~~ लिया गया है।

प्रसंग - इन पंक्तियों में स्त्री-पुरुष सम्बंधों में स्त्री की निम्न स्थिति की तरफ संकेत किया है। कि रञ्जन की माँ व एक महिला के मध्य संवाद है।

व्याख्या रञ्जन की माँ कहती है कि एक अकेली महिला को जीवन यापन करना काफी मुश्किल होता है। तथा यदि किसी वस्तु से प्यार होता है तो उसमें तोड़फोड़ तो चलती रहती है। लड़ाई होने से सम्बंध समाप्त नहीं हो जाता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष -

① सम्बंधो की इतन 'नई कहानी' की प्रमुख विशेषता है जो पंक्तियो में भी स्पष्ट हुई है।

② स्त्री-पुरुष सम्बंधों में विद्यमान असमानता को प्रदर्शित किया है।

③ रूढ़िगत मान्यताए व मजबूत होती स्त्री के मध्य द्वन्द्व है।

④ पारिवारिक सम्बंधो में कम होती आस्था।

⑤ यही भाव 'मन्नू भंडारी' की यही सच है में नायिका के पुराने प्रेमी निशीथ से मिलने पर उसके मन के अन्तर है।

⑥ विराम चिह्न, अल्प विराम तथा ~~प्रश्न~~ प्रश्नवाचक चिह्नो का मुख्य प्रयोग।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश बाल कृष्ण भट्ट द्वारा रचित है। जिनका संकलन निबंध निलय नामक संकलन में किया गया है।

प्रसंग: पंक्तियों में लेखक भारतीय समाज की नवजागरण कालीन वस्तुस्थिति ~~के~~ का विश्लेषण कर रहा है। ~~तथा~~

व्याख्या: लेखक ने भारतेन्दु कालीन 'नवजागरण' भावना के सानिध्य में भारतीय समाज के नैतिक मूल्यों के विचलन तथा परिवर्तनों का ~~मत~~ विश्लेषण किया है। लेखक कहते है इन्हें भारतीय समाज उसी तरह हो गया है जैसे एक महिला का दो पुरुषों से एक साथ प्रेम सम्बंध। अर्थात लगातार समाज नये-नये पंथो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

व सम्प्रदायों में विभाजित देखा जा रहा है|

विशेष:

① भारतेन्दु कालीन युगीन नवजागरण चेतना

② 'हिन्दु ~~जाति~~ जाति' की संकल्पना का यही रूप भारतेन्दु हरिश्चन्द्र व गुप्त जी की भारत-भारती में देखा जा सकता है|

③ नैतिक विचलनों का विश्लेषण

④ लोकभाषा व मुहावरों का प्रयोग

∴ एक नारि दो जो मैं फँसी व जैसे सन्त वैसे आत्मा|

⑤ प्रवाह युक्त खड़ी बोली (नागरी हेत ~~...~~ का युग)|

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश प्रगतिवादी काव्य लेखन के पुरोधा मार्क्सवादी उपन्यासकार 'यशपाल' द्वारा रचित स्त्री शोषण को उजागर करने वाले उपन्यास 'दिव्या' से लिया गया है|

प्रसंग - दिया गया ~~...~~ कथन श्रेष्ठि प्रेस्थ के व उसके पुत्र पृथुसेन के मध्य संवाद ~~के~~ के समय का है यहाँ समाज की पितृसत्तात्मक व भोगवादी दृष्टि प्रदर्शित हुई है|

व्याख्या: प्रेस्थ अपने पुत्र पृथुसेन से कहते हैं कि एक महिला के लिए वे अपने सम्पूर्ण जीवन की मेहनत को समाप्त नहीं कर सकते तथा उसे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समझौता है कि महत्वाकांक्षी तथा सफलता के मार्ग के पथिक ऐसे विचलित नहीं होते साथ ही नारि को पतन का द्वार कहा गया है।

विशेष

① यशपाल ने पितृसत्तात्मक समाज पर उनकी मानसिकता को उजागर करके चोट की है।

② नारि को भोग करने वाली मानसिकता

③ सूक्त वाक्य - आत्मन सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि, चाणक्य का कथन

④ भाषा की ऐतिहासिक वातावरण के लिए तत्सम हिंदी है पर ग्राह्यता बनी हुई है

⑤ नारि को पतन का ~~द्वार~~ द्वार कहना पितृसत्तात्मक सोच व रूढ़िवादी समाज का आदर्श

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर..... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं.... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ : दिया गया गद्यांश 'आत्मार्ग' हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'ललित' निबंध कुटज से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों में द्विवेदी जी ने कुटज के माध्यम से सतत संघर्ष व जीजीविषा युक्त जीवन जीने का संदेश दिया है।

व्याख्या : कुटज के माध्यम से द्विवेदी जी कहते हैं कि मैं अपनी मान्यताओं की जड़ता में मानते हुए खड़ा हूँ। लोग विरोध करते हैं पत्थर मारते हैं तथा कोई स्तुति करता है तो कोई घृणा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोरे महिलाओं पर अत्याचार कर रहा है अंत में लेखक पूछते है कि ऐसा क्यों हो रहा है?

विशेष - (1) लेखक ने अदम्य साहस व जीजीविषा के द्वारा निरंतर संघर्ष करने का सन्देश दिया है।

(2) अपनी मान्यताओं व विचारधाराओं का दृढ़ता व बीरता पूर्वक समर्थन संदेश।

(3) अलग-अलग समुदायों की मानसिक स्थिति का चित्रण।

(4) भाषा-प्रवाह युक्त व लयात्मक है तथा चित्रात्मकता पूर्ण

(5) विस्मयादि बोधक, अल्पविराम व प्रश्नवाचक चिह्नों का सुंदर प्रयोग।

(6) लेखक की निजी जीवन के संघर्ष की झलक।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ : व्याख्येय पंक्तियाँ छायावाद के आधार स्तम्भ जयशंकर प्रसाद के राष्ट्रीय जागरण का संदेश देने वाले ऐतिहासिक ~~उपन्यास~~ नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गई है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में देवसेना के के माध्यम से प्रकृति का चित्रात्मक वर्णन है तथा प्रसाद का दर्शन व्यक्त हुआ है।

व्याख्या : देवसेना कहती है कि प्रत्येक कण में एक समानता है, लय है। मनुष्य ने स्वयं युद्ध आदि कार्यों द्वारा प्रकृति से रागात्मक सम्बंध खत्म किये हैं इसलिए उसे विश्ववीणा से मिलन नहीं होता। पक्षियों की चह-चह, कलकल के प्रकृति संगीत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को प्रदर्शित करती है।

विशेष:

① भाषा - तत्सम शब्दों प्रवाहयुक्त है।

② ध्वनि मैत्री व नादात्मकता - चहचह, कल-कल, छल-छल।

③ प्रसाद का दर्शन ~~व्यक्त~~ व्यक्त हुआ है।

④ प्रसाद पर क्षणवाद तथा अद्वैतवाद का प्रभाव स्पष्ट हुआ है।

⑤ मानव-प्रकृति में रागात्मक व संगीतात्मक सम्बंध।

⑥ अल्पविरामों का सौन्दर्य अनुपम है जो गद्य को पद्य की तरह लयात्मक बनाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानी आंदोलन मध्यम वर्गीय शहरी भारतीय समाज के मानसिक द्वंद्वों व यथार्थ को व्यक्त करने वाला आंदोलन है जो नव स्वतंत्र भारत के शहरी जीवन की परतें खोलता है। मुख्य लेखकों में मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, अमरकांत प्रमुख है।

नई कहानी का विषय स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, यौन नैतिकता, शहरी एकांत व अजनबीपन, पहचान का संकट इत्यादि प्रमुख है तथा व्यक्ति के मानसिक पक्ष की तहों को खोलने का प्रयास किया है।

वहीं अमरकांत नई कहानी आंदोलन में प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी अवधारणा को आगे बढ़ाने वाले रचनाकार है जो समाज की विद्रूपताओं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा कुरीतियों का प्रहार करते है। तथा वंचित व सुभेद्य वर्ग के प्रति अपनी समानुभूति को व्यक्त करते हुए उनके शोषण को उजागर करते है।

'जिंदगी और जोंक' एक गरीब असहाय युवक 'रजुआ' के अंतहीन शोषण के चक्र को व्यक्त करने वाली कहानी है कि कैसे समाज गरीब, असहाय, दिव्यांग व्यक्तियों का शोषण करता है तथा साथ ही गरीब व्यक्ति कैसे जीवन के मूल्यों संघर्ष करता है।

(1) रजुआ गरीब, दिव्यांग तथा असहाय है- इसका फायदा पूरा मोहल्ला उठाता है तथा उसे पूरे मोहल्ले का नौकर बना दिया जाता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। बेगार करने से मना करने पर पीटा तक जाता है।

(2) मध्यम वर्गीय लोगों को प्रत्येक गरीब व्यक्ति चोर नजर आता है। साड़ी चोरी के आरोप में रजुआ को पीटा जाना, समाज की औपनिवेशिक व भेदभाव मूलक स्थिति को दर्शाता है।

(3) रजुआ जब बीमार होता है तो कोई उसकी सहायता नहीं करता व उसे मरने के लिए छोड़ दिया जाता है। जो समाज की अमानवीयता व संवेदनहीनता को बताता है।

(4) बीमारी के पश्चात भी रजुआ का जिन्दा बचना उस संघर्ष व जिजीविषा का द्योतक है जो यह बताता है कि निम्न वर्गीय जीवन में कैसे निरंतर शोषण के पश्चात भी जीवन के प्रति जीने की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इच्छा रहती है।

अतः 'जिन्दगी और जोंक' नई कहानी के आलोक में सामाजिक कुरीतियों पर चोट करती है तथा समाज को उसकी सच्चाई से सामना कराने का साहस करती है। ~~इसी तरह~~ जिस तरह 'भीष्म साहनी' ने सामाजिक समस्याओं को उठाया उसी तरह 'जिन्दगी और जोंक' विषमता व शोषण से टकराती है। यही गुण नई कहानी को अधिक समावेशी व समन्वित बनाता है जो सम्पूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व कर सके।

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

स्कन्दगुप्त जयशंकर प्रसाद का नवजागरणवादी नाटक है जो ऐतिहासिक रूप में लिखा गया है। नाटक का शीर्षक 'स्कन्दगुप्त' है जो इसकी चरित्र प्रधानता को स्पष्ट करता है।

यदि स्कन्दगुप्त के नामकरण को देखें तो हमें सबसे पहले नामकरण की कसौटियों को जानना जरूरी होगा। इन कसौटियों में प्रथम है- लेखक का प्रतिपाद्य को स्पष्ट करना। दूसरा है नाटक का विषय तथा तृतीय है पाठक पर प्रभाव व उसकी चेतना में बसा रहना।

चूँकि साहित्य में नामकरण घटनामूलक, चरित्रमूलक, वर्णनप्रधान व वातावरण इत्यादि हो सकते हैं जैसे रामचरितमानस एक चरित्र मूलक उ. महाकाव्य है उसी तरह पृथ्वीराज रासो वर्णनप्रधान

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा प्रसाद का एक दिन वातावरण पर आधारित। उसी तरह स्कन्दगुप्त नाटक चरित्र प्रधान नाटक है अतः इसका नामकरण इसके नायक स्कन्दगुप्त के नाम पर रखा गया है।

जिसके कारण निम्न लिखित है—

① स्कन्दगुप्त नाटक का नायक है वह विजय के ~~ल~~ लिए प्रयास करता है तथा सभी चिन्ताओं व विपत्तियों का सामना करता है।

② प्रसाद का नाटक ऐतिहासिक नाटक है तथा स्कन्दगुप्त एक ऐतिहासिक ~~नाटक~~ चरित्र है जिसने हूणों पर विजय प्राप्त की थी।

③ लेखक का मूल उद्देश्य गुप्तकालीन घटना का वर्णन न होकर भारतीय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जन मानस को जागृत करके राष्ट्रीय आन्दोलन की तरफ प्रेरित करना था। अतः इस कारण भी स्कन्द गुप्त नामकरण भारतीयों को प्रेरणा प्रदान करता है।

यदि हम ~~अ~~ अन्य पात्रों की बात करें तो ~~प~~ देवसेना व विजया के चरित्र भी महत्वपूर्ण है परन्तु उनसे लेखक का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता क्योंकि वे दोनों ~~नब~~ केवल काल्पनिक चरित्र है बल्कि भारतीय जनमानस को जागृत करने के उद्देश्य की पूर्ति भी नहीं कर सकते।

अतः स्कन्दगुप्त नामकरण पूर्णतः उचित व प्रभावपूर्ण है। कि जो अंत तक पाठक की चेतना में छाया रह जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की वर्तमान उपादेयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश का अस्तित्ववादी विचारधारा के प्रभाव ~~पूर्ण~~ को दर्शाने वाला नाटक है जिसके निर्णयहीनता, गलत निर्णयों के कारण जीवन के अजनबीपन, संत्रास, व विसंगति पूर्ण हो जाने को दर्शाया है।

अस्तित्ववाद के साथ-साथ है राकेश ने सत्ता, प्रकृति, व मानव सम्बंधो का भी चित्रण किया है जो नाटक को वर्तमान में भी प्रासंगिक व उपादेय बनाते हैं—

([illegible]) जो निम्न प्रकार है—

(1) लेखक, कलाकार व राज्य के मध्य तनावपूर्ण सम्बंधो व संसाधनहीनता आज अधिक प्रखर रूप में अवतरित हुई है। साहित्य अकादमी इत्यादि पुरस्कारों के सत्ता व लेखक के मध्य सम्बंधो से देखे जा सकते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) सत्ता की चाटुकारिता करने वाले लेखक सम्मान पाते हैं

(3) साहित्य कर्म में धन की कमी अधिक बनी हुई है जबकी थोथा व सतही पटकथा लेखक अधिक धन कमाते हैं

(4) प्रकृति-व मानव सम्बंधो में तनाव अधिक उभरा है। संसाधनों के अंधाधुंध शोषण ने पर्यावरण प्रदूषण व जलवायु परिवर्तन जैसे संकट पैदा किये हैं ये आषाढ़ के एक दिन की प्रियंगुमंजरी की मानसिकता की तरह ही है।

(5) स्त्री-पुरुष सम्बंधो में तनाव व विघटन अधिक बढ़ा है। जिस तरह मल्लिका जीविका विहीन होने के कारण गणिका बनी उसी तरह आज महिला शोषण बढ़ा है वहीं दूसरी ओर महिला सशक्तिकरण भी हुआ है महिलाएं अपना निर्णय स्वयं लेती हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

⑥ पीढ़ीगत अंतराल व लिपर्व मल्लिका की तुलना में वैश्वीकरण व तकनीक के युग में अधिक तेजी से बढ़ा है। वृद्धों में एकान्तता तथा अकेलापन तेजी से बढ़ा है

⑦ प्रेम तथा विवाह के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है

⑧ अतः आषाढ़ का एक दिन न केवल अपने कथ्य के बल्कि शिल्प में भी प्रासंगिक है। क्योंकि आज समय की कमी है प्रत्येक व्यक्ति व्यस्त है इसलिए छोटे नाटक अधिक प्रासंगिक हैं जो न केवल संवादगत बल्कि नाटकीय तत्वों से भी अधिक प्रासंगिक है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'रघुवीर सहाय' नई कहानी आंदोलन के प्रमुख लेखक रहे हैं। इन्होंने आधुनिक परिवर्तनशील भारतीय समाज की समस्याओं को मजबूती से उठाया है। 'विमेता' कहानी में लेखक ने अनचाही संतानों व उनके माता-पिता के मध्य तनावपूर्ण सम्बंधों का चित्रण किया है।

जो वा कामिनी गर्भ निरोधक दवाओं का सेवन करती है परन्तु दोनों बार गर्भस्थ शिशु उस आक्रमण को झेल जाता है। तत्पश्चात वह निर्णय करती है कि वह उस शिशु को जन्म देगी। इसके समय के साथ स्त्री-पुरुष सम्बंधों व पारिवारिक नियोजन के साथ-साथ मानसिक द्वंद्व व तनाव का चित्रण ~~करना~~ मानसिक तनावपूर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को चुनौतीपूर्ण बना देता है।

विशेष – (1) मानसिक यथार्थ व मनोविश्लेषणात्मक द्वन्द्व व तनाव का चित्रण।

(2) कथानक के बिखराव है।

(3) अकेलेपन शिशु तथा माता-पिता के मध्य आने वाले सम्बंधों का तनाव।

(4) गर्भ निरोधक दवाईयों के प्रयोग की तरफ बढ़ता भारतीय शहरी मध्य-वर्गीय समाज।

(5) संतान व माता के मध्य सम्बंधों का विश्लेषण

(6) निर्णय निर्माण में महिलाओं की बढ़ती भूमिका।

(7) भाषा प्रवाह पूर्ण रखने वाली है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

'परिन्दे' नई कहानी आन्दोलन की प्रथम कहानी है। 'निर्मल वर्मा' ने आपसी सम्बंधों की टूटन के साथ-साथ व्यक्ति के अकेलेपन, संत्रास, अजनबीपन की समस्या को उठाया है।

नई कहानी पर सार्त्र के अस्तित्ववाद का प्रभाव भी दिखाई देता है।

पंक्तियों में मि. ह्यूबर्ट अपना जीवन दर्शन व्यक्त करते हैं कि जिसके पीछे कोई सम्बंधी व आश्रित नहीं होता वह बेफिक्र जीवन जीता है। साथ में लेखक कहता है कि जिन व्यक्तियों को मृत्यु का अहसास नहीं होता और वे जीवन से बहुत उम्मीद लगाये रहते हैं जिससे जीवन व ऊहापोह व तनाव में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खड़ी होती है।

विशेष - ① जीवन की सघनसंकुलता तथा नश्वरता का संदेश

② अस्तित्ववाद का प्रभाव - सार्त्र, काम्यू व हाइडेगर

③ इसी तरह का प्रदर्शन मोहन राकेश के काव्य से हुआ है

④ संबंधों में छिपे रचना की मानसिकता का लेखक ने चौरस की है

⑤ 'भीड़ में अकेला' की भावना

⑥ मध्यम वर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण।

⑦ विराम चिह्नों का उचित प्रयोग।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश 'जयशंकर प्रसाद' के कालजयी ऐतिहासिक नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है। यह भारतीय जनमानस को जागृत करने का संदेश देता है।

प्रसंग - ये पंक्तियाँ नाटक के अंतिम भाग से ली गई है। स्कन्दगुप्त व देवसेना के मध्य संवाद है

व्याख्या : देवसेना कहती है कष्ट ही हृदय की असली परीक्षा लेते है। तथा सभी प्रकार के क्षणिक सुखों का अंत निश्चित है इसलिए सुख की कामना ही व्यर्थ है। अतः हे देवसेना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

त्याग के मार्ग का चयन करती है व आनन्द के मार्ग को धारित करके स्कंदगुप्त से क्षमा मांगती है।

विशेष

① प्रसाद का दर्शन - शैवाद्वैतवाद व आनन्दमूलक शैव दर्शन का प्रतिपादन हुआ है

② सुखों को क्षणिक व नश्वर बताया है जो बौद्ध दर्शन का प्रभाव है

③ त्याग व बलिदान की महिमा व्यक्त की है

④ सूक्ति वाक्यों का प्रयोग
'सब क्षणिक सुखों का अंत है।'

⑤ विस्मयादिबोधक व पूर्ण विरामों का प्रयोग प्रशंसनीय

⑥ भाषा तत्सम है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण 'मोहन राकेश के कालजयी नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है।

प्रसंग - ये पंक्तियाँ नाटक के अंतिम भाग से ली गई है जिसमे कालीदास व मल्लिका के मध्य संवाद के माध्यम से राकेश का अस्तित्ववादी दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है।

व्याख्या - कालिदास कहता है कि तुम्हारा न पहचानना स्वाभाविक है वह स्वयं भी अपने आप को नहीं पहचान रहा। अपने गलत निर्णयों के कारण कालीदास स्वयं अलग व्यक्ति प्रतीत होता है। उसे स्वयं को अजनबीपन का एहसास होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

① पंक्तियाँ नाटक का चरम बिंदु है एकालाप शैली का प्रयोग।

② गलत निर्णयों व निर्णयहीनता के कारण व्यक्ति का वस्तुकरण तथा अजनबीपन व संत्रास के कारण विसंगति-पूर्ण जीवन।

③ अस्तित्ववाद का प्रभाव - सार्त्र, काफ्का व तारखेगा।

④ भारतीय मध्यम वर्ग की दुविधा पूर्ण स्थिति।

⑤ भाषा- सहज व ~~सरल~~ तद्भव खड़ी बोली है जिसमें अल्प विरामों का सुन्दर प्रयोग किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6\. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

भारत-दुर्दशा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित नवजागरण वादी नाटक है। इसमें लेखक ने भारत की अवनतियों का पाठकों ~~क~~ आत्मावलोकन किया है

'त्रासदी' पश्चिमी अरस्तवी परम्परा ~~की~~का काव्य प्रारूप है। जिसे आगे लुकाच, अहान्दु, लैसिंग तथा शेक्सपीयर ने अपने नाटकों ~~को~~ में व्यक्त किया है

त्रासदी में नाटक का अंत दुखान्त ~~स~~ स्थिति में होता है जिससे पाठक पर विरेचनात्मक प्रभाव पड़ता है

भारत-दुर्दशा को त्रासदी ~~की~~ की कसौटियों पर कसने से पहले हमें त्रासदी की कसौटियों को जानना आवश्यक है जो निम्न प्रकार है —

① ~~क्~~ अद्भुत उदात्त नायक ② पीठमर्द उपनायक ③ खलनायक ④ नायक द्वारा नैतिक भूल या हैमार्शिया जिसके कारण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उसकी हार या मृत्यु हो जाना
(5) दुखान्त अंत जिससे विरेचन

इन कसौटियों के आधार पर भारत-दुर्दशा को देखा जाये तो सर्वप्रथम रूप से देखते हैं कि भारत-दुर्दशा का नायक भद्र व सादगी नहीं है तथा वह तो खलनायक की दहाड़ सुनकर ही बेहोश हो जाता है

इसकी कसौटी को देखें तो भारत-भाग्य धीरोदत्त उपनायक है यहाँ तक भी भारत में बेहतर नायकत्व के गुणों से युक्त है।

तृतीय कसौटी खलनायक को देखें तो भारत-दुर्दैव क्रूर व आधार किताबी दिखाया है जो भारत की दुर्दशा का प्रमुख कारण है - टैक्स शोषण, अत्याचार सिलेक्शनी इत्यादि द्वारा अत्याचार करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नैतिक भूल या हैमर्शिया को देखा जाये तो जातिवाद, अनेक पंथ व बौद्ध वादियों के मध्य झगड़े व साम्प्रदायिक हिंसा को हैमर्शिया माना जा सकता है।

भारत दुर्दशा का अंत भी दुखान्त है परन्तु यह पाठक पर विरेचन मूलक गहन प्रभाव नहीं डाल पाता है जैसा की त्रासदी में आवश्यक होता है।

अतः भारत दुर्दशा को यदि तकनीकि आधार पर देखा जाये तो त्रासदी के तत्व उस अर्थ में उपस्थित नहीं हैं परन्तु बाहरी कलेवर से देखें तो त्रासदी दिखाई पड़ता है।

अतः यहाँ भारत-दुर्दशा का त्रासदी न होना लेखक की विफलता नहीं है क्योंकि न तो उस समय त्रासदी शिल्प के रूप में हिन्दी साहित्य अवगत था और न ही लेखक ने त्रासदी लिखने का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयास किया। लेखक का मूल मंतव्य तो भारतीय जनमानस को झकझोरना था जिसके भारतेन्दु सफल हुए है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने में ठीक है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

'मैला आँचल' रेणु का प्रमुख आँचलिक उपन्यास है। परन्तु रेणु ने मैला आँचल मे आँचलिकता मे सम्पूर्ण भारतीय ग्रामीण समाज को व्यक्त किया।

जिस तरह प्रेमचंद का 'गोदान' अपने 'काल व वातावरण' की सीमाओं को तोड़कर सम्पूर्ण हिन्दी जगत का कालजयी उपन्यास बनता है इसी तरह रेणु भी भारतीय समाज को प्रदर्शित करने में सफल रहे।

जिन समस्याओं को गोदान में प्रेमचंद ने उठाया है उन्हे रेणु ने आगे बढ़ाया है जैसे - जातिवाद, महिला शोषण, मठो का अत्याचार, राजनीति दलो का दिशाहीनपन तथा संकीर्ण नजरिया, किसानों का शोषण, प्रशासनिक अत्याचार, साम्प्रदायिकता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की समस्या उभारी।

मैला आँचल की कथा गोदान के बाद की कथा है:—

① जातिवाद - गोदान में जातीय भेद दलित शोषण के रूप में यहाँ आकर अधिक गहन हो गए है- राजपूत टोला, यादव टोला, कायस्थ टोला

"जोतखी काका" मरा हुआ सांप भी बिसाता है"

② किसानों व मजदूरों के शोषण का चक्र गोदान से आगे बढ़कर अब राजनीतिक दलों के प्रयोग का हथियार बन गया जैसे दफा 340 का मामला

③ महिला शोषण व वैधव्य गोदान के झुनिया, सिलिया के माध्यम से व्यक्त हुआ यही मैला आँचल के म० में लछमी का शोषण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा संथाल महिलाओं के साथ बलात्कार की घटना के और अधिक स्पष्टता से प्रदर्शित हुआ है

④ भ्रष्टाचार की समस्या अधिक सघन हुई है मापदा का कारण अध्यक्ष बनना, बावनदास की मृत्यु तथा चलित्तर कर्मकार प्रसंग।

⑤ राजनीतिक दलों की अवसरवादिता तथा उनका दोहरा चरित्र - गोदान में जमींदार द्वारा राय साहब का स्वाधीनता संग्राम तो मैला आँचल में सोशलिस्ट, कांग्रेस द्वारा प्रत्याशी चयन व पार्टी के फंड के भ्रष्टाचार तथा अनैतिक पक्ष

अतः मैला आँचल निश्चित ही गोदान से आगे के भारत की कथा को वर्णित करता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कफन प्रेमचंद की चरम यथार्थवादी कहानी है। इसमें दलित शोषण व गरीबी को अत्यन्त मार्मिकता से दिखाया गया है।

संवेदना

① कफन कहानी के दो प्रमुख चरित्र है घीसू व माधव जो की गरीब व कामचोर दर्शाये गये है।

② घीसू व माधव गरीबी में जीवनयापन करते है जिससे अभाव ने ~~उन्हें~~ संवेदनहीन बना दिया है।

③ ~~[illegible]~~ कफन के लिए इकट्ठे किये गये पैसो से वे शराब आदि खाते है जिससे उनकी असंवेदनशीलता व अमानवीयता पता चलती है।

④ प्रेमचंद ने कफन के व्यक्त किया है कि किस तरह गरीबी शोषण व अभाव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

व्यक्ति को संवेदना शून्य बना देते है।

⑤ कफन में जातीय शोषण व आर्थिक असमानता भी एक प्रमुख पक्ष है।

कफन कहानी ~~का~~ के आधार पर कुछ आलोचक प्रेमचंद के दलित विरोधी होने का आरोप लगाते है। क्योंकि घीसू व माधव को जाति का चमार बताया गया है परन्तु प्रेमचंद ने इसका प्रयोग दलित विरोधी रूप में न होकर इसलिए किया है कि शोषण के प्रतिरूप को उजागर किया जा सके। तथा शोषण व अभाव किस तरह व्यक्ति को संवेदना शून्य बना देते है।

प्रेमचंद का साहित्य दलित विरोधी न होकर दलितों की समस्याओं को उठाता है जैसे हम सद्गति, दूध का दाम तथा गोदान के सिलिया व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उनके परिवार के प्रसंग के माध्यम से देख सकते है।

घीसू व माधव के संवेदनाहीन होने का कारण उनका दलित होना नहीं है बल्कि शोषण की वह व्यवस्था है जो व्यक्ति को गरीबी, अभाव के दुष्चक्र में धकेलती तथा उसका आधार जातीय शोषण व भेदभाव है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation